This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

संघर्ष करेंगे, जीतेंगे

;जन नाट्य मंचऋ जुलाई १९९३ऋ ३५ मिनटऋ १० कलाकारछ

पात्र विभाजन

१. आई. एम. एप़ळ.
२. शंकर
३. पूळलवती
४. संघर्ष
५. बीरबल/हिजड़ा-१
६. वैळशियर/मनमोहन/मास्टर
७. अकरम
८. मज़दूर ४/चाचा
९. गुंडा/हिजड़ा-२/कमांडो
१०. गुंडा/मालिक/नरसिम्हा

गोलाकार अभिनय स्थल में कलाकार बैठे हैं। एक कलाकार सिर्प़ळ पैंट पहने सीटी बजाते, करतब दिखाते, सबका अभिवादन करता है। बाव़ळी कलाकार ताली बजाते, तरह-तरह की आवाज़ें कसते हैं। पहला कलाकार अंदाज़ से दायरे वेळ ऐन बीच में रखे सामान को पहनता है। यह सामान है अमरीकन टी शर्ट, छड़ी, मुखौटा, अमरीकन टॉप हैट, बेल्ट में लगी पिस्तौल और एक ढीला चोगा जिस पर पैबंद लगे हैं। इन पैबंदों पर छंटनी, बेरोज़गारी, महंगाई, स्वैळम, वेळबल टी.वी., डंकल, डॉलर वग़ैरा लिखा है। यह आई.एम.एप़ळ. है। जैसे ही यह चोगा पहनता है बाव़ळी पात्र अचानक हैरान हो जाते हैं और उसे ढूंढ़ने लगते हैं मानो कि वो अदृश्य हो गया हो। आपस में और दर्शकों से आई.एम.एप़ळ. वेळ बारे में पूछते हैं। आई.एम.एप़ळ. अन्य पात्रों को दिखाई नहीं देता। वुळछ देर तक ढूंढ़ने वेळ बाद बाव़ळी पात्र तंग आ कर नाटक शुरू करते हैं।

एक पात्र : साथियो वो आदमी नज़र नहीं आ रहा।
बाव़ळी पात्र : हां!
एक पात्र : वो ग़ायब हो गया।
बाव़ळी पात्र : हां!
एक पात्र : अरे भाड़ में जाने दो उसे, हम अपना नाटक शुरू करते हैं। तो साथियो पेश है जन नाट्य मंच का नुक्कड़ नाटक 'संघर्ष करेंगे, जीतेंगे'।

गाना शुरू होता है। गाने वेळ दौरान तरह-तरह की विरचनाएं बनाई जाती हैं। पुळलबतिया और शंकर की शादी होती है। आई.एम.एप़ळ. गाने वेळ दौरान तरह-तरह की हरकतें करता है मगर किसी को नज़र नहीं आता।

गाना : प़िळटर की शादी होगी पैकर वेळ साथ
हॉर्न, बाजा होगा, रेड लाइन पे आएगी बारात।
मूंछों को गिरवी रख वुळछ न वुळछ करेंगे जुगाड़
शादी का जोड़ा बने पुरानी चद्दरों को फाड़।
सेहरे की लड़ियों में बीड़ियां लटवेळंगी
बाद में बैठवेळ उन्हें पूळंवेळगा ससुर दिन-रात।
वरमाला प्लास्टिक की, नौ रुपये घंटे पे लाए
फटाफट पंडित बुलवाओ, मुहूर्त निकल न जाए।
अग्नि की लपटों में सामग्री नहीं गिरेगी
पुरोहित ले जाएंगे घी और नैवेद्य साथ।
लाल जोड़े की जगह लाल रिबन होंगे
दुल्हे का कोट नहीं सिर्प़ळ टिच-बटन होंगे
सालियां चोरी करेंगी हवाई चप्पलें
क्या करें ये ही तो है उनवेळ जीजा की औव़ळात।
वैळसी सोच यह पाई-कहीं हो न जग हँसाई
अरे हर रीत निभाई-चाहे हो लाख महंगाई
विदा वेळ वक़्त दुल्हन रोई नहीं पर
नमक महंगा है हो न जाए बर्बाद।

शंकर और पूळलवती सो रहे हैं। आई.एम.एप़ळ. उनवेळ कान वेळ पास ज़ोर से सीटी मारता है। शंकर खटाक से उठ बैठता है और चलने लगता है।

पूळलवती : तुम कहां चले सवेरे-सवेरे!
शंकर : काम पर और कहां। तू तैयार न हुई! तुझे न जाना है काम पर?
पूळलवती : लो अभी कल तो शादी की और आज काम पर भी चल दिए। ए जी-सुनो न!
शंकर : सुन तो रहा हूं। बोल भी वुळछ।
पूळलवती : ए जी! मैं कह रही थी वो...
शंकर : अब देख लटका मत। जल्दी बोल जो बोलना है।
पूळलवती : मैं वो कह रही थी...
शंकर : अरे तुझे क्या हो गया है! कल तक तो तू बोले थी सीधे-सीधे, साप़ळ-साप़ळ। आज यह क्या कर रही है ए

जी, सुनो जी...।

पूळलवती : हां-हां! मैं भी वही कह रही हूं। मुझसे भी यूं लटकाकर न बोला जा रहा है। सीधी-सीधी बात सुन लो। आज कोई काम पर न जावेगा। आज तो हमारा हनीमून मनेगा कह दिया मैंने बस।

शंकर : हनीमून मनेगा?

पूळलवती : हां-हनीमून।

शंकर : तो उसी वेळ लिए तो इंतजाम करने जा रहा हूं। आज तनख्वाह का दिन है। मैं शाम को पैळक्ट्री से लौटूंगा तो चलेंगे हनीमून मनाने। जा तू भी काम पर होइया।

पूळलवती : सच्ची! शाम को कहां चलेंगे?

शंकर : शाम को खूब मस्ती करेंगे। अंकल चिप्स खाएंगे, पेप्सी कोला पिएंगे और अंग्रेजी पिक्चर देखेंगे।

पूळलवती : सच्ची-तू जल्दी आइयो। मैं तेरी राह देखूंगी।

शंकर : अरे मैं बस यूं गया और यूं आया।

[शंकर और पूळलवती जाते हैं। सायरन की आवाज़ होती है। चार पात्र आकर मशीन बनाते हैं। शंकर भी शामिल होता है। आई.एम.एफ़ळ. बीच में घूमता है। फिर से सायरन की आवाज़ वेळ साथ काम रुकता है। वैळशियर आता है।]

वैळशिअर : बीरबल ले यहां अंगूठा लगा। गिन ले पूरे ८६४ रुपये हैं।

बीरबल : ८६४ किसलिए? १२०० बनते हैं।

वैळशिअर : अरे बीरबल। पांच दिन तू देर से काम पर आया तो उसकी तनख़्वाह कटी। फिर तेरी लापरवाही से दो दिन मशीन ख़राब रही इसका नुव़ळसान अलग। और साइकिल स्टैंड पर साइकिल खड़ी करने का किराया। मालिक ने पैसा काटने का हुक्म दिया है। शुक्र कर कि यह मिल रहे हैं।

बीरबल : साले हर बार कोई न कोई बहाना बनाकर पैसा काट लेते हैं।

शंकर : राम-राम वैळशिअर साब। हमारे को तो पूरे पैसे देने ही पड़ेंगे। हमारे काम में आप कोई खोट नहीं निकाल सकते हैं। अजी हम न देर से आते हैं न जल्दी जाते हैं। न हमने कोई मशीन खराब की, न कोई छुट्टी ली। और तो और हमने शादी भी छुट्टी वेळ दिन की थी। और हनीमून शाम को मनाएंगे। हमारी तनख्वाह तो पूरी ही मिलेगी।

वैळशिअर : अरे-अरे तुझे पूरी तनख़्वाह मिलेगी। तू क्यों घबराता है कर यहां साइन और यह ले गिन ले १०७८ रुपये।

शंकर : पर यह क्या वैळशिअर साब यहां तो १२४२ रुपये लिखा है और आप दे रहे हैं १०७८ रुपये। यह क्या चक्कर है ?

वैळशिअर : अबे तुझे अब तक १०७८ मिलते थे न, तो फिर तुझे क्या मतलब? तू अपने पैसे रख, तुझे रजिस्टर से क्या लेना?

शंकर : उल्लू तो बनाओ मत। हम भी सब जाने हैं। न्यूनतम वेतन बढ़ाने का आर्डर आ गया है। पिछले महीने यूनियन वेळ दबाव से तुम लोगों से न्यूनतम वेतन देने की बात पक्की हुई है। अब तुम हमसे साइन तो करवा रहे हो १२४२ रुपये पर और पकड़ा रहे हो १०७८ रुपये।

वैळशिअर : पैसे लेने हैं तो ले वरना आगे चलता बन।

शंकर : मैं एक पैसा कम नहीं लूंगा। १२४२ रुपये पर साइन करवेळ १०७८ रुपये नहीं लूंगा। यह अंधेरगर्दी नहीं चलेगी।

गुंडा-१ : बड़ी जुबान निकल आई है तेरी। जा बेटा ले जा और हनीमून मना ले।

गुंडा-२ : अबे सुहागरात वेळ दिन अपनी जोरू को क्यों रांड बनाने पर तुला है। शाबास ले ले पैसे।

शंकर : अबे तू कौन होता है मुझे पैसे दिलवाने वाला। मैं एक भी पैसा कम नहीं लूंगा।

मज़दूर-४ : शंकर मान जा झगड़ा मत कर।

बीरबल : हां-हां शंकर वेतन ले ले नहीं तो मारेंगे तुझे।

शंकर : चुप करो तुम लोग। अरे यह भाड़े वेळ टट्टू बिगाड़ क्या लेंगे हमारा।

गुंडा-१ : लगता है इसकी जोरू को उठाना ही पड़ेगा।

गुंडा-२ : हां उस्ताद। क्या टंच माल है। क्या मटक-मटक कर चलती है ज़ालिम। उस्ताद देखोगे तो गश आ जाएगा।

शंकर : अबे ओ सूअर जबान संभाल वेळ बात करियो नहीं तो...

गुंडा-१ : नहीं तो क्या कर लेगा बच्चे *;उकसाने वाले अंदाज़ में*

गुंडा-२ : अबे हिम्मत है तो बाहर आ।

[गुंडे शंकर को उकसाते हैं। शंकर वेळ साथी शंकर को रोकते हैं। आई.एम.एफ़ळ. गुंडों वेळ साथ हँसता है। शंकर अपने आपको छुड़ा कर कहता है।]

शंकर : छोड़ो मुझे, डरते हो इन वुळत्तों से। ये बिगाड़ क्या लेंगे हमारा। चुपचाप खड़े क्या देख रहे हो। १२४२ पर साइन करवाकर १०७८ में टरका देते हैं। किसी न किसी बहाने उसमें से भी पैसा मार लेते हैं और तुम चूं भी नहीं करते। धिक्कार है तुम लोगों पर। कायर कहीं वेळ, हिजड़े हैं सब वेळ सब।

अकरम : शंकर ठीक कहता है। हम १०७८ लेकर १२४२ पर साइन नहीं करेंगे।

मज़दूर-४ : हां-यह अंधेरगर्दी नहीं चलेगी।

अकरम : अरे यूनियन ने तो १६५४ न्यूनतम वेतन की मांग की है और यह १२४२ देने में ही नानुकर कर रहे हैं।

मज़दूर-४ : भाइयो आज कोई तनख्वाह नहीं लेगा।

वैळशिअर : अब तुम्हें वेतन मिलेगा भी नहीं जाओ भागो, खिड़की बंद।

शंकर : जाओ बड़े आए वेतन न देने वाले, वेतन तो तेरे अच्छे भी देंगे। लेंगे तो पूरा वेतन लेंगे।

अकरम : लेवेळ रहेंगे पूरा वेतन।

सब : १६५४-१६५४

मज़दूर-४ : गुंडागर्दी नहीं चलेगी...।

सभी पात्रों का प्रस्थान। पूळलवती का प्रवेश गाते हुए। गाने वेळ और संवाद वेळ दौरान आई.एम.एफ़ळ. पूळलवती वेळ पीछे-पीछे चलता है और उसको लोलुप निगाहों से देखता है।

पूळलवती : मैं कामिनी कचनार हूं मैं इक मजदूर नार हूं
गैंती हूं मैं छैनी हूं मैं, मैं कटर की धार हूं...
पूळलवती मैं, बसमति मैं, गोरी काली नार हूं
रूपवती मैं यशमति मैं सोलह सिंगार हूं मैं कामिनी..।
इतनी देर लगा दी। जाने कहां बातों में लगा होगा। कहता था मैं यूं गया और यूं आया। कहता था शाम को हनीमून मनाएंगे, पेप्सी कोला पिएंगे, अंकल चिप्स खाएंगे, अंग्रेजी फिल्म देखेंगे। समझ में तो वुळछ आएगा नहीं गिटर-पिटर अंग्रेजी फिल्म देखेगा। दसवीं पेळल है मुआं लेकिन शौक ऐसे करे है जैसे कलेक्टर हो। कह रहा था तू काम पर हो आइयो। काम नहीं रुकना चाहिए। हो आई मैं काम से, वहां वो हरामजादा ठेवेळदार वैळसे घूर-घूर कर देख रहा था। जैसे पहले कभी देखा ही न हो। ''पुळलबतिया वैसे तो हम शादीशुदा औरतों को रखे ना हैं। वो बहुत काम चोरी करे हैं। घर वेळ काम काज में उलझी रहे हैं। पर तेरी बात और है, पुळलबतिया तुझे हम रख लेंगे। लेकिन तुझे हर सैकड़ा १५ पैसे कम मिलेंगे।'' देखती हूं वैळसे कम देता है हरामजादा। बूढ़ा खूसट धोती में हगवा न दिया तो मेरा नाम पुळलबतिया नहीं। मगर यह कहां रह गया, जरूर यूनियन आफिस गया होगा। वहां जाए बगैर उसकी रोटी नहीं हजम होती। चलकर पता करती हूं।

पूळलवती बाहर जाती है। आई.एम.एफ़ळ. बैठता है। अकरम, चाचा ;मज़दूर नेताद्ध और शंकर का प्रवेश

अकरम : ठीक किया तूने तनख़्वाह न लेकर। लेकिन अब हमें यह तय करना होगा कि आगे क्या करना है।

चाचा : कामरेड वह भी तय कर लेंगे। पर अब इसे जाने दो अभी कल ही तो शादी हुई है। पहले दिन ही बहू को इतना इंतज़ार कराना ठीक नहीं। क्यूं ठीक कही न।

शंकर : नहीं चाचा वह बात नहीं है। इस वैळशिअर को ठीक करना ही होगा। वुळछ तय करना ही होगा।

चाचा : अरे बचवा अभी तो संघर्ष की शुरूआत है और फिर यह किसी एक पैळक्ट्री या मिल-मालिक की बात नहीं है। यह उन सरकारी नीतियों का भी सवाल है जो इस सरकार ने विदेशी दबाव में आकर बनाई हैं।

शंकर : चाचा आप तो हर चीज को सरकारी नीतियों और विदेशी दबाव वेळ साथ जोड़ देते हो। हम तो अपने दुश्मन को साफ-साफ पहचानते हैं यह मिल मालिक, यह गुंडे और यह वैळशिअर।

चाचा : इतना उतावला न हो शंकर, असली जड़ तक तो हमें अभी पहुंचना है और वो हम संघर्ष वेळ ज़रिए ही पहुंचेंगे।

पुळलबतिया का प्रवेश

पूळलवती : राम राम चाचा।

चाचा : मैं न कहता था कि पहले ही दिन बहू को इंतज़ार करवाएगा।

अकरम : मैं भी तो यही कह रहा हूं चाचा। भाभी इंतज़ार करती होगी।

शंकर : पर चाचा, अकरम...

अकरम : अरे हां-हां घर जा। वैळशिअर भी यहीं है। तू भी और चाचा भी यहीं हैं। कोई भागे थोड़े ही जा रहे हैं।

चाचा : कल गेट मीटिंग पर सब तय हो जाएगा तू घबरा मत।

शंकर : पर चाचा मैं तो वो पैवेळट लेने आया था जो मैंने अकरम को दिया था।

अकरम : यह ले पैवेळट और जल्दी घर जा। भाभी इंतजार कर रही है।

शंकर : हां-हां जा रहा हूं।

चाचा और अकरम बाहर जाते हैं।

पूळलवती : तनख्वाह नहीं मिली। फिर से की होगी मार-पीट।

शंकर : अरे वो साला वैळशिअर ज्यादा पर साइन करवाकर कम पैसे दे रहा था। पर तू फिक्र न कर। कल गेट मीटिंग हो जाने दे फिर देख लेंगे। फिर एक भी मजदूर ने आज तनख्वाह नहीं ली यह कोई कम बड़ी बात नहीं है। वुळछ एक वेळ घर में तो आज चूल्हा भी नहीं जलेगा।

पूळलवती : पर हमारे हनीमून का क्या होगा? सारे सपने हवा हो गए।

शंकर : हनीमून तो हम मनाएंगे ही, हमारे सपने इतनी जल्दी खत्म नहीं हो सकते। हम जिंदा सपने देखते हैं इसीलिए

तो संघर्ष करते हैं।

पूळलवती : *;चिढ़ाते हुएद्ध* हम जिंदा सपने देखते हैं इसीलिए तो संघर्ष करते हैं। बड़ा आया जिंदा सपने देखने वाला। मुझे नहीं देखने तेरे जिंदा सपने।

शंकर : ए रूठ गई क्या? देख मैं तेरे लिए क्या लाया हूं, ए देख न। *।चादर ओढ़ाता है। गीत वेळ दौरान अलग-अलग विरचनाएं बनती हैं। अंत में संघर्ष का जन्म होता है।।*

गाना : यह माघ का महीना
मां ने काता सूत
बापू चादर बनाई, मां ने तन से लगाई
उसका जिया हरषाया
मां का पहलौठा मां की कोख में आया।
खेले फागुन गुलाल, सुर्ख़ हुए उसवेळ गाल
पुळलबतिया शरमाई, बात पिया को बताई
बढ़ी दोनों की प्रीत, यह संघर्षों का गीत।
आया महीना चैत, मालिक हव़ळ न देत
तेज़ हो गई लड़ाई, गए मज़दूर चेत।
आई झूमती बैसाखी, सोना धरती वेळ अंग
यौम-ए-मई का जुलूस, लाल झंडे का रंग।
मज़दूर बहाते पसीना, रोटी मिले दो जून
यह जेठ का महीना, मालिक चूसते हैं ख़ून।
पीला जर्द मां का रंग, बिना मांस वेळ है हाड़
फिर भी गिनती है पीस, यह महीना आषाढ़।
चली सावन की पुरवैया, मां का छूट गया काम
ठेवेळदार ने बुलाया, कहा-करो घर आराम।
बचा कमाने वाला एक, आई भादों की बरसात
घर का छप्पर टूट गया, नहीं मरम्मत की औव़ळात।
आए आश्विन वेळ दिन, मां करे है सिलाई
उसने चोला बनाया, आई धरती की दाई।
कार्तिक की हवाओं ने, पालना झुलाया
मां का पहला बालक, मां की गोद में आया।
यह मुप़ळलिसी का पाला, ज़िंदा सपनों का जाया।
यह अजल का जोगी, हर युग में ये आया
पुळलबतिया का बेटा संघर्ष कहलाया।

।हिज़डों का प्रवेश।

हिजड़ा-१ : बधाई हो कावेळ की बधाई हो।

हिजड़ा-२ : बधाई हो मुन्ने की बधाई हो।

।गाते हैं। आई.एम.एप़ळ. भी नाचता है। आई.एम.एप़ळ. को कोई नहीं देख पाता। मगर संघर्ष बचपन से ही आई.एम.एप़ळ. को देख सकता है।।

चादर वेळ नीचे क्या है-चादर वेळ नीचे
पर्दे वेळ पीछे क्या है-पर्दे वेळ पीछे
चादर में मुन्ना मेरा-पर्दे में काका मेरा
लूंगी मैं रुपया १०१...

हिजड़ा-१ : पुळलबतिया नाचते-नाचते थक गए। अब मुंह तो मीठा करा।

हिजड़ा-२ : पानी न सही पेप्सी कोला तो पिलवा।

हिजड़ा-१ : मोरनी मैं तो पूरा १०१ रुपया लूंगी।

हिजड़ा-२ : नैना! मैं तो एक साड़ी भी लूंगी। पहला काका है पहला।

पूळलवती : जो हमारी हैसियत है वो करेंगे ही। यह लो। *;पैसे देती है।द्ध*

संघर्ष : मां उसे भी दो वो भी नाचा था।

पूळलवती : कौन? और कौन है?

संघर्ष : वो मां। *;आई.एम.एप़ळ. की तरप़ळ इशारा करता है। मां को वुळछ नज़र नहीं आता।द्ध*

हिजड़ा-१ : यह क्या सिर्प़ळ १० रुपये!

हिजड़ा-२ : इनसे क्या होगा। यह तो अभी हवा हो जाएंगे।

;आई.एम.एप़ळ. दोनों वेळ हाथ से पैसे ले लेता है।द्ध

संघर्ष : मां उसने पैसे ले लिए।

पूळलवती : तू चुपकर। देखो हमारी इतनी ही हैसियत है। इससे ज्यादा हम वुळछ नहीं कर सकते।

हिजड़ा-१ : हाय-हाय पहला काका है। उस पर भी ऐसी बलाएं।

हिजड़ा-२ : हम तो लेकर ही जाएंगे।

पूळलवती : अरे तुम्हारी ऐसी की तैसी। निकलते हो या लगाऊं दो-चार हाथ!

।हिजड़े चले जाते हैं। आई.एम.एप़ळ. हँसता है। मुन्ना देखता है।।

पूळलवती : मुन्ना चल आ तू यहां क्या कर रहा है। हर वक्त पाउडर वेळ डिब्बे, कोलगेट वेळ पैवेळट इन्हें इकट्ठा करवेळ क्या करता है तू। चल आ जल्दी तैयार हो जा।

संघर्ष : आ रहा हूं मां।

।शंकर का प्रवेश।

शंकर : मुन्ने को तैयार नहीं किया अभी तक। आज इसका दाखिला करवाना है स्वूळल में। उसवेळ बाद पैळक्ट्री भी पहुंचना है बहुत जरूरी मीटिंग है। सुना है मालिक तालाबंदी की धमकी दे रहे हैं।

संघर्ष : बापू मैं तैयार हो गया। मैंने सारी ए बी सी सीख ली है।।मैं तो लिख भी लेता हूं।

शंकर : चल मुन्ना जल्दी चल। मास्टर साब को सारी सुना दियो। *।दोनों जाते हैं। स्वूळल का दृश्य मास्टर पढ़ाता है। बच्चे दोहराते हैं। आई.एम.एप़ळ. भी साथ में मज़े लेता है।।*

मास्टर : ए फ़ॉर

बच्चे : अमरीका
मास्टर : बी फ़ॉर
बच्चे : बोफ़ोर्स
मास्टर : सी फ़ॉर
बच्चे : कोका कोला
मास्टर : डी फ़ॉर
बच्चे : डंकल
मास्टर : ई फ़ॉर
बच्चे : एग्ज़िट पॉलिसी
मास्टर : एफ़ फ़ॉर
बच्चे : फ़ॉरेन
मास्टर : जी फ़ॉर
बच्चे : गुंडागर्दी
मास्टर : एच फ़ॉर
बच्चे : हर्षद मेहता
मास्टर : आई फ़ॉर
बच्चे : ईलू-ईलू
मास्टर : चुप बे ईलू-ईलू!
मास्टर : आइ फ़ॉर
एक बच्चा : इंडिया *;सारे जहां से अच्छा... गाता है।द्ध*
मास्टर : चुप बे! इंडिया! *;फिर पूछता हैद्ध* आइ फ़ॉर
बच्चे : आई.एम.एफ़.
मास्टर : कल सभी बच्चे अपनी-अपनी कापियों में अमरीका से लेकर आई.एम.एफ़. तक लिखकर लाएंगे। समझ गए।
बच्चे : हां जी।
मास्टर : क्या समझे?
बच्चे : हां जी।
मास्टर : हां जी-हां जी कहना और इसी क्लास में रहना। चलो भागो हरामज़ादो अब पी.टी. का घंटा है। अगर किसी भी लड़वेळ ने पुळटबॉल को हाथ लगाया तो हाथ तोड़ दूंगा।
एक बच्चा : मास्साब पैर लगा सकते हैं पुळटबॉल को।
मास्टर : हरामी! साला! *[शंकर का प्रवेश। सब बच्चे भागते हैं।]*
शंकर : नमस्कार मास्टर साब।
मास्टर : क्या है?
शंकर : वो उन्होंने बताया कि दाखिले वेळ इंचार्ज आप हैं। मुझे अपने मुन्ना का दाखिला करवाना है।
मास्टर : क्या नाम है इसका?
संघर्ष : संघर्ष!
मास्टर : जाट है।
शंकर : नहीं, मजदूर हूं।
मास्टर : अच्छा। क्या मज़दूरी करता है?
शंकर : फिटर हूं। मेरा मुन्ना ए बी सी भी जाने है। आप वुळछ भी पूछ लो इससे।
संघर्ष : हां मुझे सारी ए बी सी आती है।
मास्टर : वाहरे गुदड़ी वेळ लाल। अभी करता हूं तेरा इंटरव्यू। *;मास्टर ए दिखाता है। आई.एम.एफ़. उसवेळ आगे 'आई' लगा देता हैद्ध*
ये क्या है?
संघर्ष : आई।
मास्टर : *;'बी' दिखाता है। आई.एम.एफ़. उसवेळ आगे 'एम' लगा देता हैद्ध*
और ये क्या है?
संघर्ष : एम।
मास्टर : वाह भई वाह *;फिर 'सी' दिखाता है उसवेळ आगे आई. एम.एफ़. 'एफ़' लगा देता है।द्ध* और ये क्या है?
संघर्ष : एफ़।
मास्टर : यह तो सारे जवाब अंग्रेज़ी में ही देवे है भाई। इसको तो तू किसी प्राइवेट स्वूळल में दाख़िल करवा दे।
शंकर : इतनी तो हैसियत ना है मेरी मास्टर साब।
मास्टर : हां तू तो चवन्नी वाले स्वूळल में ही भेजेगा। सारे नालायव़ळ यहीं आते हैं भर्ती होने। फिर कहते हैं स्वूळल का रिज़ल्ट अच्छा नहीं है। गधे भी कभी आदमी बने हैं। जा फ़ीस जमा करा दे। कल से स्वूळल भेज दियो।
शंकर : मास्टर साब। सुना था कि गरीब बच्चों को वर्दी और किताबें मुफ्त मिलती हैं।
मास्टर : सब वुळछ मुफ़्त में ही ले लो। सरकार ने यह रियायतें बंद कर दी हैं। वैसे ही पढ़े-लिखे बेरोज़गार बढ़ रहे हैं। सरकार ने तय किया है लोगों को साक्षर करो। पढ़ाओ नहीं। और ग्रेजुएट तो वही बने जिसवेळ पास इतना पैसा हो कि अगर नौकरी नहीं मिली तो अपना बिजनेस कर सवेळ। इसलिए सरकार ने फ़ीस बढ़ा दी और रियायतें बंद कर दी हैं। अब सरकार वेळ पास पैसा न है, तभी तो हमारी तनख़्वाह भी काट रहे हैं और तू है कि मुफ़्त की वर्दी और किताबें मांग रहा है। *[इस संवाद वेळ दौरान आई.एम.एफ़. मास्टर की जेब से पर्स निकाल लेता है और ए बी सी वाले प्लेकार्ड भी उससे ले लेता है।]*
शंकर : तनख्वाह कट रही है। तो चलो मास्टर साब हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष करो।
मास्टर : हम कोई मज़दूर हैं जो संघर्ष करें। कर लेंगे कोई न

कोई जुगाड़। ट्यूशन पढ़ाएंगे या वुळछ और कर लेंगे। नौकरी का क्या है आज है कल नहीं।

शंकर : तो मास्टर साब तुम करो छंटनी का इंतजार। हमें जीना है तो संघर्ष करना होगा। चल मुन्ना मीटिंग का टाइम हो गया। तेरी फीस जमा करावेळ सीधे पैळक्ट्री जाना है।

संघर्ष : बाबा! वो आदमी सारी वर्दी और किताबें लेकर चला गया।

शंकर : कौन आदमी।

संघर्ष : वही जिसने आई.एम.एप़ळ. दिखलाया था। और उसने ना मास्टर साब की जेब से पैसे भी निकाले थे।

शंकर : जेब से पैसे निकाले थे, आई.एम.एप़ळ. दिखलाया था। पता नहीं क्या कह रहा है तू। चल जल्दी से फीस जमा करा दें, पैळक्ट्री जाना है। वहां गेट मीटिंग में 'जन नाट्य मंच' का नुक्कड़ नाटक भी होगा चल जल्दी चल।

दोनों जाते हैं। पीछे-पीछे आई.एम.एप़ळ. भी जाता है। ढोलक की थाप वेळ साथ, नाटक वेळ अंदर नुक्कड़ नाटक का एक सीन शुरू होता है, आई.एम. एप़ळ. भी बैठकर देखता है।

पात्र-१ : हम चाहते हैं हर बशर को जीने का अधिकार हो

पात्र-२ : हम चाहते हैं सर पे न छंटनी की तलवार हो।

पात्र-३ : हम चाहते हैं हों हमारे पास भी पक्वेळ मकान

पात्र-४ : हो अगर काम बराबर तो मिले वेतन समान।

सब : हम चाहते हैं सबको शिक्षा और सबको काम हो
हम चाहते हैं देश यह फिर से न ग़ुलाम हो।
हम चाहते हैं अब न दंगे कोई भड़का सवेळ
हम चाहते हैं आदमीयत पूळले-फले गा सवेळ।
हम आदमी को आदमी से चाहते हैं जोड़ना
हम ज़ुल्म वेळ पहाड़ को चाहते हैं तोड़ना।
हम जानते हैं यह हमारी पैळसलावुळन जंग है
हम जानते हैं लाल अपने परचम का रंग है...

चाचा : हर ज़ोर ज़ुल्म की टक्कर में

सब : संघर्ष हमारा नारा है

नारे लगते हैं। जुलूस बनता है। शंकर और संघर्ष भी जुलूस में शामिल होते हैं। चाचा जुलूस में सबसे आगे है। दूसरी तरफ़ळ से मालिक और आई. एम.एप़ळ. का प्रवेश होता है।

नारे : अपना हव़ळ लेवेळ रहेंगे
लेवेळ रहेंगे लेवेळ रहेंगे
क्लोज़र छंटनी नहीं सहेंगे
नहीं सहेंगे नहीं सहेंगे।

मालिक : देखिए अभी हमारे साथ वुळछ विदेशी मेहमान हैं। आप लोग चाहें तो १५ मिनट बाद हम आपसे बात कर सकते हैं। आप अपने नुमाइंदे हमारे आपि़ळस में भेज दें।

मालिक और आई.एम.एप़ळ. का प्रस्थान। मज़दूर नारे लगाते हैं।

चाचा : साथियो। इलावे़ळ वेळ सारे मज़दूरों की एकजुटता वेळ चलते मालिकों ने हमें बातचीत वेळ लिए बुलाया है। मैं दोहराना चाहता हूं साथियो, यह एक पैळक्ट्री की बात नहीं है। आज पुंजसंस तो कल कोई और बंद हो सकती है। यह एक मज़दूर का नहीं सारे मज़दूरों का सवाल है। चाहे वो प्राइवेट सेक्टर का हो या पब्लिक सेक्टर का। पक्का मज़दूर हो या ठेवेळ का। सबवेळ सिरों पर छंटनी की तलवार लटक रही है। और इसका मुव़ळाबला हम अपनी एकजुटता से ही कर सकते हैं, अपने संघर्षों से ही कर सकते हैं।
;नारा लगता हैद्ध 'हर ज़ोर ज़ुल्म की टक्कर में-संघर्ष हमारा नारा है' 'आवाज़ दो-हम एक हैं'। साथियो। मालिकों से बातचीत वेळ लिए मैं, कामरेड अकरम और कामरेड शंकर जाएंगे। धरना जारी रहेगा।

संघर्ष : बाबा मैं भी जाऊंगा।

शंकर : तू चुपचाप वहां बैठ जा।

संघर्ष : नहीं। मैं भी चलूंगा।

चाचा : अरे ले चल शंकर।

शंकर : चाचा आप भी वैळसी बातें कर रहे हैं! यह मैनेजमेंट से मीटिंग है।

चाचा : बच्चा है। ज़िद कर रहा है तो ले चल। *चारों जाते हैं।*

मालिक : देखिए आप समझदार लोग हैं। मांग ऐसी रखिए जिन्हें हम पूरा कर सवेळं।

चाचा : हमारी वेळवल दो मांगे हैं - पहली यह कि हमें एक भी मज़दूर की छंटनी मंजूर नहीं। दूसरी - न्यूनतम वेतन और महंगाई भत्ते की हमारी मांग को पूरा किया जाए।

मालिक : आप लोग समझने की कोशिश कीजिए। हर साल हमें पैळक्ट्री में लाखों रुपये का घाटा सहना पड़ रहा है।

अकरम : अरे साहब रहने दीजिए। फिर वही घिसापिटा रिकार्ड। हर महीने नई विदेशी कार बदलते हैं और हमें कह रहे हो घाटा सहना पड़ता है। कोई और कारण ढूंढ़िए, इससे बात नहीं बनी।

मालिक : देखिए। इस तरह बातचीत नहीं हो सकती। हम समझौते की बात कर रहे हैं।

अकरम : अरे जाओ-जाओ बड़े आए समझौता करने वाले। हम सब जानते हैं तुम्हारे तरीवे़ळ।

चाचा : अकरम! छोड़िए सेठजी बच्चा है। आप अपनी बात पूरी करें।

मालिक : हम तो साफ़ळ बात करना जानते हैं। ज़माना काफ़ळी आगे बढ़ गया है। पै़ळक्ट्री जितनी हमारी है उतनी ही आपकी भी। इस बात को तो आप लोग मानते हैं।

शंकर : फर्वळ सिर्फ़ळ इतना है कि आप मालिक हैं और हम मजदूर। हम मेहनत करते हैं आप नफा कमाते हैं।

मालिक : नफ़ळा! वही तो मैं कह रहा हूं, जो आपकी समझ में नहीं आ रहा है। अगर पै़ळक्ट्री को घाटे से बचाना है तो उसका आधुनिकीकरण करना ज़रूरी है। नई मशीनें लानी होंगी, नए उपकरण लाने होंगे। और उनमें पैसा लगता है। पैसा हमारे पास है नहीं। *आई.एम.एफ़ळ. जो अभी तक ख़ामोश है मालिक से बात करता है। मगर संघर्ष और मालिक वेळ सिवाय उसे कोई देख सुन नहीं सकता।*

आई.एम.एफ़ळ.:पैसा हम देगा। हमारे साथ हाथ मिला लो तुम्हें ख़ूब मुनाफ़ळा होगा! नहीं तो तुम बर्बाद, तुम्हारा घटिया माल कोई नहीं ख़रीदेगा। मगर पहले फ़ळालतू लोगों को बाहर निकालो-छंटनी करो छंटनी।

मालिक : ठीक है सर। ऐसा ही होगा। *;मज़दूर नेताओं सेद्ध* अगर आप लोगों ने हमारी मदद नहीं की तो पै़ळक्ट्री बंद भी हो सकती है। हम वुळछ मज़दूरों को रिटायर करना चाहते हैं। वैसे भी नई मशीनें आने वेळ बाद उनकी ज़रूरत नहीं रहेगी। हम आपको पूरा आश्वासन देते हैं कि आपवेळ हितों का पूरा ध्यान रखा जाएगा।

चाचा : देखिए हम भी चाहते हैं कि पै़ळक्ट्री चले। उसका आधुनिकीकरण हो, नई मशीनें आएं। मगर एक भी मज़दूर की छंटनी हमें मंजूर नहीं। ठीक कहता है अकरमऋ आपवेळ पास हर महीने नई कार बदलने वेळ लिए पैसा है। मगर नई मशीनों वेळ लिए नहीं। और जो पै़ळक्ट्री आप विदेशी मदद से लगाने जा रहे हैं उसवेळ बारे में भी हम जानते हैं।

संघर्ष : हां दद्दू यह उससे बात भी कर रहा था। वो कह रहा था हमारी मदद से पै़ळक्ट्री लगाओ।

शंकर : क्या बक रहा है। चुपचाप खड़ा रह।

मालिक : देखिए हमने जो कहना था हमने कह दिया। अगर आप को हमारी बात मंजूर नहीं तो हमें तालाबंदी करनी पड़ेगी। हमारे पास इसवेळ अलावा कोई चारा नहीं। अब आप लोग जा सकते हैं।

आई.एम.एफ़ळ. संघर्ष को इन संवादों वेळ दौरान छड़ी और पिस्तौल से धमकाता है। मालिक जाता है।

शंकर : अब क्या किया जाए।

संघर्ष : अकरम चाचा वो आदमी बीच-बीच में टोपीवाले से बात कर रहा था।

अकरम : कौन टोपीवाला?

संघर्ष : वही जो तुम्हारे पीछे खड़ा है।

अकरम : *;पीछे मुड़ता हैद्ध* कौन खड़ा है पीछे!

शंकर : अरे इसकी बातें मत सुन। सुबह से न जाने क्या ऊट पटांग बवेळ जा रहा है।

चाचा : पर शंकर मालिक किसी से बात तो ज़रूर कर रहा था। बीच में उसने 'ठीक है सर' भी कहा था।

संघर्ष : हां दद्दू यही टोपीवाला। बाबा, यही जिसने स्वूळल में आई.एम.एफ़ळ. दिखलाया था और फिर वर्दी और किताबें लेकर भाग गया था यही कह रहा था। छंटनी करो, मुनाफ़ळा कमाओ।

;आई.एम.एफ़ळ. संघर्ष को फिर धमकाता है।द्ध

शंकर : देखा चाचा, मैं न कहता था इसे बाहर छोड़ आओ। बच्चा ही तो है। ऐसी मीटिंग का दिमाग पर जाने क्या असर पड़ता है।

चाचा : ख़ैर। अब तो यह सोचना है कि आगे क्या करें। बाव़ळी साथियों से सलाह लेते हैं।

सब : क्या हुआ चाचा? मीटिंग में क्या तय हुआ?

चाचा : साथियो। मैनेजमैंट ने हमारी मांगें मानने से इंकार कर दिया है। वो छंटनी वापस लेने को तैयार नहीं और आधे मज़दूरों की छंटनी करने पर आमादा हैं। उन्होंने तालाबंदी की धमकी भी दी है। साथियो हम इसे चुपचाप नहीं सहेंगे। हम अपना संघर्ष और तेज़ करेंगे।

एक मज़दूर : पर चाचा हम छंटनी हुए वुळछ मज़दूरों की खातिर बाकी मजदूरों को तो नुकसान नहीं पहुंचा सकते।

शंकर : क्या बकते हो। आज बीरबल की छंटनी हुई है कल मुझे भी निकाला जा सकता है। आज अकरम को निकाल रहे हैं कल तुम्हें भी निकाल सकते हैं।

चाचा : ठीक कहता है शंकर ये किसी एक मज़दूर की लड़ाई नहीं। ये हम सबकी साझी लड़ाई है।

पूळलवती : हां मैं तो इस पैळक्ट्री में काम नहीं करती, मैं तो ठेवेळ की मजदूर हूं फिर भी मैं धरने में शामिल हुई हूं। और भी पैळक्ट्रियों वेळ मजदूर यहां आए हैं।

चाचा : हां हमें सबको साथ लेकर चलना होगा। हमें अपना संघर्ष और तेज़ करना होगा। हम सरकार का दरवाज़ा खटखटाएंगे हम प्रधानमंत्री वेळ यहां धरना देंगे। चलो साथियो।

नारा : अभी तो ये अंगड़ाई है
आगे और लड़ाई है।
हर ज़ोर ज़ुल्म की टक्कर में

संघर्ष हमारा नारा है।

इस पूरे दृश्य वेळ दौरान आई.एम.एप़ळ. संघर्ष को लगातार धमकाता रहता है। संघर्ष, बाव़ळी सबका ध्यान आई.एम.एप़ळ. की तरप़ळ आवृळष्ट करने की कोशिश करता है मगर कोई ध्यान नहीं देता। दृश्य वेळ अंत में जुलूस की शक्ल में सब जाते हैं पीछे-पीछे संघर्ष भी है। आख़िरी नारे पर अचानक संघर्ष आई.एम.एप़ळ. वेळ सामने आकर ज़ोर से नारा लगाता है और फिर बिना डरे आगे बढ़ जाता है। आई.एम.एप़ळ. सकपकाकर देखता रह जाता है और अभिनय स्थल की परिधि पर बैठ जाता है। सब मज़दूर दूसरी तरप़ळ धरने पर बैठते हैं। ब्लैक कमांडो का प्रवेश होता है।

ब्लैक कमांडो: "मैं हूं ब्लैक कमांडो नंबर वन
हर दम रहता हूं मैं अटेंशन।
सिक्यूरिटी में लगा है मेरा तन-मन
सिक्यूरिटी से मुझको मिले है धन।
मेरे होते मार न पाए पर परिंदा
नरसिम्हा की सिक्यूरिटी का मैं हूं बंदा।"
;मज़दूरों सेद्ध कौन हो तुम और क्या चाहते हो?

शंकर : हमें प्रधानमंत्री से मिलना है।

ब्लैक कमांडो: प्रधानमंत्रीजी अभी व्यस्त हैं।

शंकर : व्यस्त हैं!

ब्लैक कमांडो: हां। वो वित्तमंत्रीजी से ज़रूरी बातें कर रहे हैं। इस वक़्त परिंदा भी पर नहीं मार सकता। यह हमारा इंतज़ाम है ब्लैक कमांडो नंबर वन का इंतज़ाम।

प्रधानमंत्री, मनमोहन और आई.एम.एप़ळ. का प्रवेश

संघर्ष : मगर अंदर तो वो एक और आदमी से भी बातें कर रहे हैं।

;बातों की आवाज़ें आती हैं।द्ध

ब्लैक कमांडो: नो। यह नामुमकिन है। इम्पॉसिबल।

संघर्ष : तुम्हें यव़ळीन नहीं आता तो खुद अंदर देख लो।

ब्लैक कमांडो: हम अभी देखते हैं। हमारी चार सिक्यूरिटी वॉल को कौन फांदकर गया है।

प्रधानमंत्री, मनमोहन और आई.एम.एप़ळ. बातें कर रहे हैं।

मनमोहन : सर! हमने आपवेळ कहे मुताबिव़ळ सब कर लिया है।

नरसिम्हा : जी हां सर! अब सब लहर पेप्सी पीते हैं, 'लियो' खिलौनों से खेलते हैं, विडियो देखते हैं। सर हमने सब वुळछ स्कीम वेळ मुताबिव़ळ ही किया है।

मनमोहन : सर। पिछली बार आपसे मुलाव़ळात वेळ बाद हमने रुपये की व़ळीमत ६ पैसे कर दी थी। पर सर इस बार तो हमने यह हव़ळ भी आप पर छोड़ दिया है कि आप जो चाहें रुपये वेळ साथ कर सकते हैं।

नरसिम्हा : डी.टी.सी. तो बस बंद ही समझो। डेसू *;बिजली विभागद्ध* भी हम बेच रहे हैं।

मनमोहन : तमाम पब्लिक सेक्टर को हम बेचने की सोच रहे हैं। बिजली, पानी और रेलवे को भी गिरवी रखने का इरादा है।

आई.एम.एप़ळ.: वो सब तो ठीक है। हमने तुम्हें लोन इसीलिए दिया कि हमें तुम पर यव़ळीन था। मगर तुम लोगों ने अभी तक दवाओं वेळ बारे में कोई व़ळदम नहीं बढ़ाया। दवाएं अब भी कम दामों पर मिल रही हैं। हमारे लोन से ली गई गाय का बछड़ा अब भी किसान वेळ पास रहता है। हमें वो बछड़ा चाहिए। हम वो बछड़ा मांगटा है।

मनमोहन : मगर सर आप उस बछड़े का क्या करेंगे?

आई.एम.एप़ळ.: हम उस बछड़े का सांड बनाएगा। यू नो बुल, बिग बुल।

;नरसिम्हा को अचानक दौरा पड़ जाता हैद्ध

नरसिम्हा : *;चिल्लाते हुएद्ध* हमें पांच साल पूरे करने हैं।

आई.एम.एप़ळ.: हे मन्नू! इसे क्या हुआवट हैपन्ड?

मनमोहन : सर आपने बिग बुल यानी हर्षद मेहता का ज़िक्र किया न। उसका नाम सुनते ही इन्हें दौरा पड़ जाता है।

आई.एम.एप़ळ.: डौरा!

मनमोहन : यैस सर। डौरा।

;ब्लैक कमांडो हरकत में आता है।द्ध

ब्लैक कमांडो: किससे बात कर रहे हैं सर। सिक्यूरिटी अलार्म! कोई है।

मनमोहन : क्या बात है नंबर वन।

ब्लैक कमांडो: शी ऽऽऽ चुप। ख़तरा है सर।

मनमोहन : ख़तरा, कहां है ख़तरा।

आई.एम.एप़ळ.: यह कौन है मनमोहन? इसे यहां से भगाओ।

मनमोहन : सर यह हमारे प्रधानमंत्रीजी का सिक्यूरिटी गार्ड है। मुझे किसी से बात करता देख यह सोच रहा है कि यहां कोई सिक्यूरिटी प़ळाल्ट है।

ब्लैक कमांडो: आप किससे बातें कर रहे हैं? इधर कोई है।

;अचानक मुड़कर बंदूव़ळ आई.एम.एप़ळ. की ओर मोड़ देता है। आई.एम.एप़ळ. डरते हुए पीछे हटता है।द्ध

आई.एम.एप़ळ.: मन्नू इसे रोको। इसे बोलो गन हटाए। बहुट ख़टरनाक हटियार है। हमारी कंपनी ने सप्लाई किया है--बहुट लीथल वैपन है। इसे हटाओ।

मनमोहन : सर आप मौन धारण कर लीजिए। हमारे मौनी बाबा की तरह। यह आपको देख-सुन नहीं सकता। मुझे आपसे बात करता देख परेशान है।

आई.एम.एप़ळ. चुप होकर नरसिम्हा की बगल में खड़ा हो जाता है।

मनमोहन : नंबर वन।

ब्लैक कमांडो : यैस सर!

मनमोहन : अटेंशन! अबाउट टर्न एण्ड गैट आउट। *ब्लैक कमांडो*

मुड़कर मार्च करता हुआ जाता है और अंदर आते हुए शंकर, चाचा, अकरम और संघर्ष से टकरा जाता है। चारों आगे बढ़ते हैं। ब्लैक कमांडो मनमोहन से टकरा जाता है।

मनमोहन : क्या बात है नंबर वन।

ब्लैक कमांडो: सर यह लोग...

मनमोहन : कौन हैं यह लोग?

ब्लैक कमांडो: सर यह लोग प्रधानमंत्रीजी से मिलना चाहते हैं।

मनमोहन : क्या आप मिलेंगे सर!

नरसिम्हा : हां-हां। हमें पांच साल पूरे करने हैं।

मनमोहन : ओह! पांच साल पूरे करने हैं। अच्छा आप लोग प्रधानमंत्रीजी से मिल सकते हैं। लेकिन जल्दी कीजिए वह काफ़ळी व्यस्त हैं।

नरसिम्हा : हां-हां हमें पांच साल पूरे करने हैं।

शंकर : हम जानना चाहते हैं कि क्या मालिकों को मिल बंद करने और छंटनी करने की इजाजत है?

नरसिम्हा : हां-हां। हमें पांच साल पूरे करने हैं।

चाचा : आपने उन्हें छंटनी की इजाज़त क्यों दी? क्या आप चाहते हैं कि मज़दूर बेरोज़गार हो जाएं?

अकरम : पहले ही हमें जीने लायव़ळ वेतन नहीं मिलता है। ऊपर से यह छंटनी की बात। क्या आप चाहते हैं कि हम जानवरों से भी बदतर जिंदगी जिएं?

नरसिम्हा : हां-हां हमें पांच साल पूरे करने हैं।

पूळलवती : आपने स्वूळल की वर्दी और किताबों पर रिआयत बंद कर दी।

बीरबल : राशन वेळ दाम बढ़ा दिए। चीनी, दूध, तेल सब महंगा कर दिया।

चाचा : सरकारी अस्पतालों में जांच वेळ लिए फ़ळीसें लगा दी हैं।

अकरम : आपने डी.टी.सी. को ख़तम कर दिया। ब्लू लाइन बसें चला दीं। उनमें हमारा पास भी नहीं चलता।

नरसिम्हा : हां-हां हमें पांच साल पूरे करने हैं।

पूळलवती : देश जलता रहा और आप चुपचाप बैठे रहे।

शंकर : संविधान और कानून को खुलेआम तोड़ा गया और आपने कहा कि हमारे पास पूरी सूचना नहीं है।

बीरबल : आपने विदेशियों को बढ़ावा दिया और सरकारी कंपनी को बेचा।

चाचा : आपने देश को ग़ुलामी की राह पर धवेळल दिया।

संघर्ष : आपने इस लुटरे वेळ साथ मिलकर सबको लूटा।

सब : किसवेळ साथ मिलकर!

नरसिम्हा : हां-हां हमें पांच साल पूरे करने हैं।

आई.एम.एफ़ळ.: अगर तुम इसी तरह बकटा रहा तो पांच साल तो क्या पांच घंटे भी नहीं चल पाएगा।

नरसिम्हा : मगर हमें पांच साल पूरे करने हैं।

आई.एम.एफ़ळ.: मन्नू इसे समझाओ। इसका दिमाग़ फिर गया है। इसने एक ही रट लगा रखा है। इसे बताओ अगर यह समझदारी से काम नहीं लेगा तो हम अपना सपोर्ट भगवा पल्टन को ट्रांसफ़ळर कर देगा। उन्होंने भी हमें पूरा विश्वास दिलाया है कि वो लिबरलाइज़ेशन यानी खुलापन जारी रखेगा।

मनमोहन : सर। मैं अभी समझाता हूं। *;नरसिम्हा वेळ कान में वुळछ कहता है।द्ध*

नरसिम्हा : हां-हां हमें पांच साल पूरे करने हैं।

मनमोहन : तभी तो।

आई एम.एफ़ळ.: मनमोहन, यह ऐसे नहीं समझेगा।

मनमोहन : सर आप प्लीज़ एक मिनट चुप रहिए।

ब्लैक कमांडो: *;अचानक हरकत में आता हैद्ध* सिक्यूरिटी रिस्क! कौन है? सिक्यूरिटी रिस्क। कोई है यहां।

संघर्ष : वो है आई.एम.एफ़ळ.।

ब्लैक कमांडो: *;प्रधानमंत्री सेद्ध* सर!! सिक्यूरिटी पेळलियर! परिंदा पर मार रहा है।

नरसिम्हा : हां हां! हमें...।

शंकर : कौन है संघर्ष? किससे करते हैं यह लोग बातचीत?

चाचा : हां। कहां नज़र आ रहा है आई.एम.एफ़ळ.। कौन विदेशी है यहां?

कमांडो : हां। कहां है वो परिंदा। मैं उसे गोली से उड़ा दूंगा।

संघर्ष : कमाल है। आप लोगों को यह नज़र क्यों नहीं आता। यह तो हर जगह मौजूद है, पाउडर वेळ दूध में, टूथपेस्ट में, अंकल चिप्स में, पेप्सी कोला में। स्वूळल से यह वर्दी और किताब ले जाता है। यह राशन खा जाता है। पैळक्ट्री में छंटनी करवाता है। यह रेडलाइन का वह पहिया है जो अपने मुनाफ़ेळ की ख़ातिर सबको वुळचलता चला जाता है। यह तो सब जगह है। आप लोग इसे पहचानते क्यों नहीं!

संवाद वेळ दौरान संघर्ष एक-एक करवेळ आई.एम.एफ़ळ. वेळ चोगे पर लगे पैबंद हटा देता है और फिर आई.एम.एफ़ळ. का चोगा ही उतार लेता है। नीचे से टी शर्ट नज़र आने लगती है। आई.एम.एफ़ळ. एक बार फिर से सबको नज़र आने लगता है।

सब : कौन है यह?

चाचा : ओह ! आई.एम.एफ़ळ. यानी अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विदेशी कर्ज़ा। मैं न कहता था इन सब चीज़ों में इसका हाथ है।

ब्लैक कमांडोः ओहो तो यह है वो परिंदा जो कि सिक्यूरिटी वेळ सारे इंतज़ाम को पेळल करवेळ पर मार गया। मैं अभी इसे ख़त्म करता हूं।

मनमोहन : हाल्ट नंबर वन। यह हमारे मेहमान हैं।

नरसिम्हा : हां-हां नंबर वन हमें पांच साल पूरे करने हैं।

मनमोहन : देखिए, अब आप लोग जा सकते हैं। हमें एक ज़रूरी मीटिंग करनी है अपने विदेशी मेहमान वेळ साथ।

नरसिम्हा : हां-हां! हमें पूरे पांच साल रहना है।

मनमोहन : वैसे भी प्रधानमंत्रीजी ने आपसे जो कहना था वो कह चुवेळ हैं।

नरसिम्हा : हां हमने कह दिया है कि हमें पांच साल पूरे करने हैं और हम करेंगे। आप लोग जा सकते हैं।

चाचा : आई.एम.एफ़ळ. वेळ दलालो गद्दी छोड़ो *;सब दोहराते हैंद्ध*
सबको शिक्षा सबको काम
फिर न होगा देश ग़ुलाम

आई.एम.एफ़ळ.ः मनमोहन यह नारे बंद करवाओ। इनसे हमारा सिर फटता है।

मनमोहन : नंबर वन। इन लोगों को धक्वेळ देकर बाहर निकाल दो।

आई.एम.एफ़ळ.ः नंबर वन हमने यह गन तुमको किसलिए दिया है। फ़ळायर करो फ़ळायर *;नरसिम्हा, मनमोहन व आइ.एम. एफ़ळ. फ़ळायर का आर्डर देते हैं।द्ध*

ब्लैक कमांडोः फ़ळायर।

[संघर्ष झंडा लेकर आगे बढ़ता है घायल होकर गिरता है। आई.एम.एफ़ळ. नरसिम्हा और मनमोहन ठहाका लगाते हैं और प्रस्थान करते हैं।]

संघर्ष : हर ज़ोर ज़ुल्म की टक्कर में...

सब : संघर्ष हमारा नारा है।

शंकर/

पूळलवती : तुम लाख कर लो ज़ुल्म
संघर्ष रुक न पाएगा
काफ़िळला जो चल पड़ा है
अब न रोका जाएगा
गोलियों की गूंज से आवाज़ दब न पाएगी
जंग यह जीने की है अब नहीं रुक पाएगी।

;सभी गाना गाते हैं।द्ध

o